DR. ANWAR ALAM
KARIMCITY COLLEGE JAMSHEDPUR
B.A (H) SEM III CC-7
TOPIC — THE CANTON COMMERCIAL SYSTEM

The Canton Commercial System
कैण्टन व्यापारिक पद्धति

पुर्नजागरण काल की जागृति ने यूरोपवासियों को सारे संसार में फैलने को प्रोत्साहित किया और इसी संदर्भ में वे चीन भी पहुँचे। सर्वप्रथम चीन में पुर्तगिज़ का आगमन हुआ फिर उसके बाद स्पेनिश पहुँचे और चीन के प्रसिद्ध बन्दरगाह कैण्टन को अपना निवास स्थान बनाया और यहाँ से इन लोगों ने अपने व्यापारिक सम्बन्ध चीन के साथ स्थापित करना आरम्भ कर दिया। अब धीरे-धीरे और भी पाश्चात्य जातियाँ चीन आने लगी जिनमें डच, अंग्रेज़, फ्रेंच इतालियन तथा जर्मन आदि। इसके बाद अमेरिका और रुस के भी व्यापारी चीन पहुँचे। साथ ही साथ विदेशी मिशनरियाँ भी चीन आने लगी और धर्म प्रचार का कार्य करने लगी जिससे चीन की जनता और सरकार घृणा करने लगी। उनका विचार था कि पाश्चात्य देशों से सम्पर्क बढ़ाने पर चीन की सभ्यता तथा संस्कृति नष्ट हो सकती है, इसलिए चीनी अब इनसे अलग रहने में ही भलाई समझने लगे। इनकी गतिविधियों को सीमित करने का प्रयास किया साथ ही उनके व्यापार को भी चीन में सीमित कर दिया और व्यापारियों पर अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध लगाये। एक आदेश के अनुसार विदेशी व्यापारियों को दक्षिणी चीन के केवल एक बन्दरगाह कैण्टन से व्यापार की अनुमति मिली।

Scanned by TapScanner

यूरोप के व्यापारियों को यह भी आदेश मिला था कि वह केवल कार्य की अवधी तक ही कैण्टन में रह सकते थे। शेष अवधी में इन्हें मकाऊ द्वीप चले जाना होता था। इन्हें यह भी अधिकार नहीं था कि वे अपने परिवार को कैण्टन लाएं और न ही वे वहाँ अपनी कोठियाँ बना सकते थे। किन्तु बाद में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने वहाँ अपनी एक कोठी बना ली थी। इसके अतिरिक्त चीन में एक व्यापारिक दल का संगठन किया गया जिसे कौहांग (Kohang) कहा गया। अब इस दल की देख रेख और परामर्श पर ही विदेशी व्यापारी चीन में व्यापार कर सकते थे। इस तरह 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध तक चीनी सरकार ने पैनी नज़र बनाये रखी और यह स्पष्ट कर दिया कि व्यापारिक मामलों के लिए किसी अन्य बन्दरगाह को उपयोग नहीं करेंगे। किन्तु इस आदेश का इन विदेशियों पर कोई खास असर नहीं पड़ा। व्यापार के साथ साथ चीन की राजनीति पर भी इनका हस्तक्षेप होना आरम्भ होगया। अब ये कैण्टन से बाहर निकल कर दूसरे बन्दरगाह पर भी व्यापार करना आरम्भ कर दिया। चीन में इस समय तक अफीम के व्यापार में वृद्धि होने लगी थी और वहाँ के लोग इसके सेवन के आदी होने लगे थे। अब अफीम की मांग चीन में लगातार बढ़ने लगी थी। अंग्रेज व्यापारी चीन के स्थानीय व्यापारियों को घूस देकर अपनी ओर मिलाने लगे थे इस प्रकार अब अफीम का व्यापार भली भांति फलने-फूलने लगा था। 1800 ई. तक चीन में अफीम की बिक्री की कीमत वहाँ से खरीदे जाने वाले माल से भी अधिक हो गई थी। जिससे चीन की सरकार की चिन्ता बढ़ गयी थी। बाद में अफीम व्यापार को लेकर चीनी सरकार ने सख्त कदम उठाये और फिर यही वजह चीन और इंग्लैण्ड के बीच युद्ध का कारण बनी।

—×—